**International Journal of Multidisciplinary Research and Development**
**Online ISSN: 2349-4182, Print ISSN: 2349-5979, Impact Factor: RJIF 5.72**
**www.allsubjectjournal.com**
**Volume 4; Issue 8; August 2017; Page No. 282-284**

# रीवा जिले में प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर आदिवासी शिक्षा के विकास का विशलेषणात्मक अध्ययन

**डॉ. अरुण कुमार ओझा**

प्राचार्य, वैष्णवी शिक्षा महाविद्यालय, घुरेहटी, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत।

**सारांश**

प्रस्तुत शोध पत्र रीवा जिले में प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर आदिवासी शिक्षा के विकास का विशलेषणात्मक अध्ययन पर आधारित है। शोध पत्र में आदिवासी शिक्षा विकास हेतु सर्व शिक्षा अभियान के अन्तर्गत आदिवासी समुदाय शिक्षा के प्रति कितना जागरुक है, शिक्षा प्राप्त करने की ओर कितना ध्यान दे रहे है, शासन की नीतियों का सफलतापूर्वक पालन हो रहा है या नहीं, पर विस्तार से अध्ययन किया गया है। आदिवासी समुदाय अपनी विशिष्ट पहचान बनाने में कामयाब रहा है या नहीं, इसी का का विशलेषणात्मक अध्ययन किया गया है।

**शब्द कुंजी:** रीवा जिला, प्रारंभिक शिक्षा स्तर, आदिवासी शिक्षा व विकास

## प्रस्तावना

शिक्षा का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थी के व्यवहार, ज्ञान तथा विकास को सकारात्मक रूप प्रदान कर उसे समाज के अनुकूल बनाना है। अनुसन्धान तथा विभिन्न शैक्षिक क्रियाओं के माध्यम से हम इन लक्ष्यों की प्राप्ति का प्रयास करते हैं। शिक्षण की समस्याओं तथा विद्यार्थियों के व्यवहार के विकास से सम्बन्धित सभी समस्याओं का अध्ययन हम शैक्षिक अनुसन्धान प्रक्रिया के माध्यम से ही करते हैं।

शिक्षण एक स्वयं में अति विस्तृत क्षेत्र है तथा अनुसन्धान किसी समस्या के समाधान के लिए चरणबद्ध पद्धति से किया जाने वाला प्रयास है। वहीं शैक्षिक अनुसन्धान से मूल प्रश्नों का समाधान किया जा सकता है तथा इसके परिणामस्वरूप नवीन ज्ञान में वृद्धि की जा सकती है। निश्चय ही शैक्षिक अनुसन्धान अन्य सामाजिक तथ्यों से पृथक है क्योंकि अन्य सामाजिक विषयों के अनुसन्धान में नवीन ज्ञान की वृद्धि को ही महत्व दिया जाता है जबकि शैक्षिक अनुसन्धान में वृद्धि के साथ–साथ उसकी उपयोगिता का होना भी अत्यंत आवश्यक है। इस प्रकार शैक्षिक अनुसन्धान के अन्तर्गत शिक्षा के क्षेत्र में नवीन विषयों अथवा तथ्यों की खोज नवीन सिद्धांतों तथा सत्यों का क्रियान्वयन किया जाता है।

शिक्षा के द्वारा विविध प्रकार के समस्याओं का अध्ययन तथा समाधान किया जाता है। शिक्षा के द्वारा भावी नागरिकों में ऐसे ज्ञान अवबोध कौशल तथा अभिवृत्तियों का समावेश किया जाता है जो उन्हें अपने–अपने वैज्ञानिक सामाजिक तथा राष्ट्रीय दायित्वों को सफलतापूर्वक करने योग्य बना सकते है। वर्तमान समय में शिक्षा प्रदान करने में मुख्यतः दो माध्यम है। परम्परागत माध्यम एवं दूरस्थ माध्यम/परम्परागत शिक्षा प्रणाली में शिक्षक और छात्र आमने सामने बैठकर अध्ययन और अध्यापन का कार्य करते है। इसने शिक्षक उनका समाधान औपचारिक और अनौपचारिक ढंग से करता है साथ ही प्रक्रिया को समझने के ठोस हल देता है।

स्वतंत्रता के पूर्व तथा स्वतंत्रता के पश्चात् पहले दशक तक हमारे देश में शिक्षा की स्थिति अत्यंत निराशाजनक थी। स्वतंत्रता के समय मात्र 18 प्रतिशत लोग ही शिक्षित थे उसमे भी बालिका शिक्षा की स्थिति बहुत ही दयनीय थी। इसका प्रमाण देते हुए डॉ. श्रीधरनाथ मुखोपाध्याय ने लिखा है कि ''प्राथमिक शिक्षा की स्थिति संतोषप्रद नहीं थी। सन् 1947 मे सिर्फ 10–11 आयु वर्ग के एक चौथाई बालक प्राथमिक शिक्षा प्राप्त कर रहे थे।''

शिक्षा को गुणवत्तापूर्ण एवं सर्वसुलभ बनाने, समाज के अंतिम छोर तक इसके विस्तार करने और उसे सुदृढ़ता प्रदान करने हेतु भारत सरकार के संकल्प से प्रदेशों मे सर्वशिक्षा अभियान लागू किया गया है। राज्य सरकारों और स्थानीय स्वशासनों के भागीदारी से शुरू किये गये इस कार्यक्रम का उद्देश्य 2010 तक 6–14 आयु वर्ग के सभी बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना है।

प्रस्तुत शोध पत्र रीवा जिले में प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर आदिवासी शिक्षा विकास पर सर्व शिक्षा अभियान के अन्तर्गत आदिवासी समुदाय शिक्षा के प्रति कितना आकर्शित एवं जागृत हुआ है और शिक्षा प्राप्त करने की ओर कितना ध्यान दे रहा है शासन की शिक्षा नीतियों का सफलता पूर्वक पालन कर रहा है या नहीं? इस शोध पत्र का यह प्रमुख उद्देश्य है। शिक्षा मानव के चहुमुखी विकास का आधार स्तंभ है। संविधान में निर्धारित है कि उच्च प्राथमिक स्तर पर 14 वर्ष तक के बच्चों को निःशुल्क शिक्षा उपब्ध कराई जावे इसका प्रमुख उद्देश्य सामाजिक व आर्थिक दृष्टि से इन पिछड़े वर्ग को शिक्षा देकर अन्य वर्ग के बराबरी पर लाना है।

### शोध समस्या में प्रयुक्त शब्दावली का परिभाषीकरण :

1. **रीवा जिला–** मध्यप्रदेश राजस्व के विभाजित जिलों में से एक जिला है जो 09 विकासखण्डों में विभाजित है जो निम्न है– रीवा, रायपुर कर्चुलियान, गंगेव, सिरमौर, मऊगंज, नईगढ़ी, हनुमना, त्योंथर व जवा।
2. **प्रारंभिक शिक्षा स्तर –** मध्यप्रदेश शासन द्वारा संचालित कक्षा 6 से 8 तक।
3. **आदिवासी क्षेत्र –** रीवा जिले में आदिवासी बस्तियों में संचालित प्राथमिक विद्यालय।
4. **विकास –** विकास से तात्पर्य है प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर शासन द्वारा उपलब्ध विभिन्न योजनाओं का लाभ छात्रों को मिल रहा है कि जानकारी प्राप्त करना।
5. **विशलेषणात्मक अध्ययन –** शोध के अन्तर्गत न्यादर्श हेतु चयनित विद्यालयों में अध्ययनरत आदिवासी क्षेत्रों के प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत छात्रों को विभिन्न योजनाओं के लाभ का विशलेषणात्मक अध्ययन करना है।

**अध्ययन का उद्देश्य**

1. रीवा जिले में आदिवासी क्षेत्रों के ग्रामीण व शहरी क्षेत्र में आदिवासी बच्चों को प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त करने की गतिविधि का अध्ययन करना।
2. रीवा जिले में आदिवासी क्षेत्रों के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों की शैक्षणिक सुविधाओं का उचित उपयोग न करने का व उचित लाभ न उठाने के कारणों का अध्ययन करना।
3. शिक्षा अध्ययन में रुचि न लेना शाला से पलायन करना अथवा गैरहाजिर रहना।
4. शालाओं में क्रीड़ा प्रतियोगिता या खेल को महत्व न देना।

**शोध परिकल्पना**

शैक्षिक अनुसंधान में समस्या चयन के बाद परिकल्पनाओं की रचना शोध प्रक्रिया का दूसरा महत्वपूर्ण स्तम्भ है। परिकल्पना से समस्या समाधान को उचित दिशा निर्धारित होती हैं परिकल्पनाओं द्वारा अनुसंधानकर्ता को तर्क संगत आंकड़ों के संकलन में ठीक दिशा मिलती है। भौतिक विज्ञानों में एक ही परिकल्पना को लेकर उसका परीक्षण करते हैं, किन्तु शैक्षिक अनुसंधान में अनेक परिकल्पनायें लेते हैं और प्रत्येक की सत्यता का परीक्षण करते हैं। अतः परिकल्पना का निर्माण समस्या की प्रकृति पर निर्भर है। प्रस्तुत शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ निम्नानुसार हैं:–

1. "रीवा जिले में प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर छात्रवृत्ति का समय पर न मिलना, मध्यान्ह भोजन की गुणवत्ता का अभाव है।"

**अध्ययन का परिसीमन**

प्रस्तावित शोध कार्य का क्षेत्र जिला रीवा है। इसके अन्तर्गत 9 विकासखण्ड – रीवा, रायपुर कर्चुलियान, गंगेव, सिरमौर, मऊगंज, नईगढ़ी, हनुमना, त्योंथर व जवा हैं।

**न्यादर्श चयन**

शोध कार्य को सार्थक करने के लिए न्यादर्श का चयन किया जाता है। जिले के सभी 9 विकासखण्डों से 5–5 विद्यालय कुल 45 विद्यालयों का चयन दैव निदर्शन द्वारा अध्ययन हेतु लिया गया। शोध कार्य के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु गहन अध्ययन करने के लिए न्यादर्श के रूप में चयनित विद्यालयों से 2–2 शिक्षक कुल 90 शिक्षक, प्रत्येक विद्यालय के प्रधानाध्यापक, 2–2 अभिभावक कुल 90 अभिभावक तथा प्रत्येक विद्यालय से 05 बालक व 05 बालिका, कुल 450 का चयन दैव निदर्शन पद्धति से साक्षात्कार हेतु किया गया है।

**शोध विधि**

शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध अध्ययन के विधिवत सम्पादन के लिए निम्न शोध विधियों का चयन किया गया है–

**सर्वेक्षण अध्ययन विधि :** सर्वेक्षण अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण अंग है। इसके द्वारा शोध समस्या के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित आंकड़ों का संग्रहण किया जाता है। आंकड़े मुख्य तथा वर्तमान स्तर का निर्धारण, वर्तमान स्तर की मान्य स्तर से तुलना, तथा वर्तमान स्तर को विकसित करने में महत्वपूर्ण उपादान होते हैं। सर्वेक्षण में व्यक्ति की अपेक्षा तथ्यों, परिस्थितियों तथा गणनाओं को प्राथमिकता दी जाती है।

**साक्षात्कार विधि :** शैक्षिक अनुसंधान में साक्षात्कार विधि का प्रयोग सर्वाधिक किया जाता है। इस विधि के द्वारा गुणात्मक एवं संख्यात्मक दोनो प्रकार की जानकारियाँ प्राप्त की जा सकती हैं। इस अनुसंधान में भी शोधार्थी ने साक्षात्कार विधि का प्रयोग किया है।

**साख्यिकीय विधि :** सर्वेक्षण तथा साक्षात्कार विधि से प्राप्त ऑकड़ो का वर्गीकरण एवं सारणीयन किया गया है। जिनकी व्याख्या एवं विष्लेशण हेतु, सांख्यकीय विधियाँ प्रयोग में लाई गयी है। प्रस्तुत शोधकार्य में परिकल्पनाओं का परीक्षण सांख्यकीय विधियों द्वारा करने के लिये– Mean, प्रतिशत (%), S.D., Chisquare test, 'T' Test आदि प्रयोग किये गये है, साथ ही गुणात्मक विश्लेषण पर भी ध्यान रखा गया हैं।

**पूर्व अध्ययन समीक्षा**

पूर्ववर्ती अध्ययन से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सबन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोशों, पत्र–पत्रिकाओं, शोध पत्रों तथा अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निमार्ण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने तथा कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है इनमें से मुख्य रूप से शर्मा (2007)[2], मंगल (2005)[3], पाठक (20013)[4], गुप्ता (1997)[5], भोलेराव (2015)[6], त्रिपाठी (2007)[7] एवं प्रसाद गोमती (2009)[8] ने शोध विषय से सम्बन्धित कार्य किये है।

**शोध उपकरण**

स्वनिर्मित प्रश्नावली द्वारा शिक्षक, प्रधानाध्यापक, अभिभावक व छात्रों से साक्षात्कार व प्रश्नावली के माध्यम से ज्ञात किया गया है।

**शोध क्षेत्र का परिचय**

जिला रीवा मध्य प्रदेश के उत्तरी–पूर्वी कोने में स्थित है। रीवा का नामकरण नर्मदा नदी के दूसरे नाम 'रेवा' पर आधारित है। रीवा नगर का नाम पहले शायद 'रेवा' रखा गया था। उसी का बिगड़ा रूप अब रीवा बन गया है। इसके उत्तर में उत्तर प्रदेश के बांदा एवं इलाहाबाद जिले, पूर्व तथा पूर्व–उत्तर में उत्तर प्रदेश का ही मिर्जापुर जिला, दक्षिण में अपने राज्य का सीधी जिला और दक्षिण–पश्चिम तथा पश्चिम में सतना जिला है। इसका आकार लगभग त्रिभुज के समान है। इसका विस्तार $24.18^0$ उत्तरी अक्षांश से $25^0$ उत्तरी अक्षांश तथा $81.2^0$ पूर्वी देक्षांश से $82.18^0$ पूर्वी देक्षांश के मध्य है। रीवा जिले का क्षेत्रफल 6287 वर्ग किलोमीटर है।

**परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या**

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

**सारणी क्रमांक 1 :** प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर छात्रवृत्ति का समय पर न मिलना, मध्यान्ह भोजन की गुणवत्ता का अध्ययन

| क्र. | न्यादर्श | न्यादर्श में चयनित संख्या | प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर छात्रवृत्ति का समय पर न मिलना, मध्यान्ह भोजन की गुणवत्ता का | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | अभाव है | | अभाव नही है | |
| | | | संख्या | प्रतिशत | संख्या | प्रतिशत |
| 1. | प्राचार्य | 45 | 38 | 84.44 | 07 | 15.56 |
| 2. | शिक्षक | 90 | 72 | 80.00 | 18 | 20.00 |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 3. | अभिभावक | 90 | 63 | 70.00 | 27 | 30.00 |
| 4. | छात्र | 450 | 350 | 77.78 | 100 | 22.22 |
| योग | | 675 | 523 | 77.48 | 152 | 22.52 |

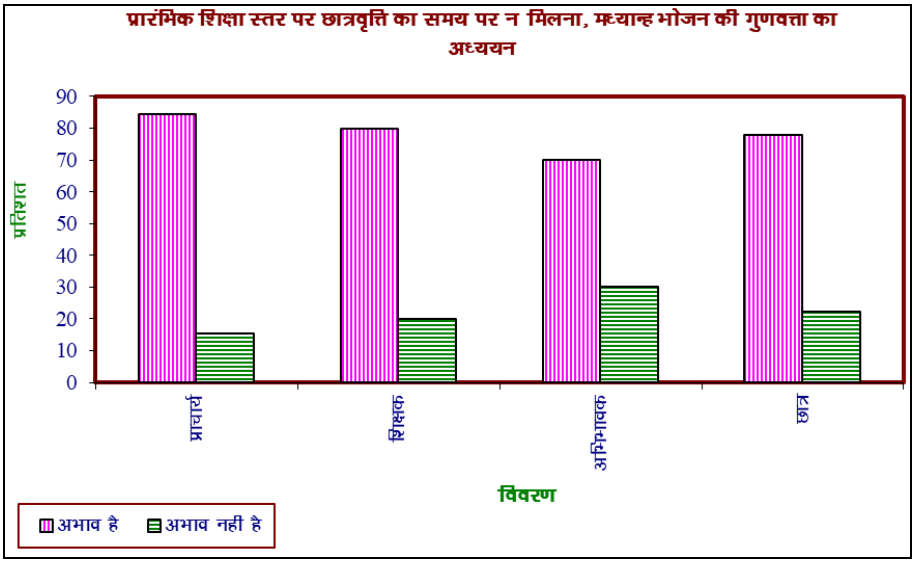


आकृति 1

स्पष्ट होता है, कि शोध क्षेत्र के 84.44 प्रतिशत प्रधानाध्यापक, 80.00 प्रतिशत शिक्षक, 70.00 प्रतिशत अभिभावक व 77.78 प्रतिशत छात्र यह मानते हैं, कि शोध क्षेत्र के प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर छात्रवृत्ति का समय पर न मिलना, मध्यान्ह भोजन की गुणवत्ता का अभाव है और शोध क्षेत्र के 30.00 प्रतिशत अभिभावक व 22.22 प्रतिशत छात्र, 20.00 प्रतिशत शिक्षक व 15.56 प्रतिशत प्राचार्य यह मानते हैं, कि शोध क्षेत्र के उच्च प्राथमिक स्तर पर छात्रवृत्ति का समय पर न मिलना, मध्यान्ह भोजन की गुणवत्ता का अभाव नही है।

## सांख्यिकीय विष्लेषण

### काई वर्ग की गणना

सारणी क्रमांक 2

| आवृत्ति | अभाव है | अभाव नही है |
|---|---|---|
| $F_o$ | 523 | 152 |
| $F_e$ | 337.50 | 337.50 |
| $F_o$-$F_e$ | 185.50 | -185.50 |
| $(F_o-F_e)^2$ | 34410.25 | 34410.25 |
| $\frac{(F_0-F_e)^2}{F_e}$ | 101.96 | 101.96 |

$$x^2 = \sum \frac{(F_0-F_e)^2}{F_e}$$

$x^2 = 203.91$

### विश्लेषण एवं व्याख्या

शोध क्षेत्र के उच्च प्राथमिक स्तर पर छात्रवृत्ति का समय पर न मिलना, मध्यान्ह भोजन की गुणवत्ता की स्थिति ज्ञात करने के लिए प्राप्त आंकड़ों को काई वर्ग द्वारा विश्लेषित किया गया। गणना द्वारा $x^2$ का मान 203.91 है, जबकि तालिकामान 1df पर तथा 0.05 व 0.01 level पर 3.84 व 6.63 है। गणना मान अधिक होने के कारण सार्थक है कि प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर छात्रवृत्ति का समय पर न मिलना, मध्यान्ह भोजन की गुणवत्ता का अभाव है। अतः परिकल्पना सत्यापित होती है।

## निष्कर्ष

अनुसंधान के परिणामों से प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर यह ज्ञात हुआ कि रीवा जिले में प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर छात्रवृत्ति का समय पर न मिलना, मध्यान्ह भोजन की गुणवत्ता का अभाव है।

## संदर्भ


1. मासिक छात्र युवा (स्वामी विवकानंद की शिक्षा दर्शन), भारतीय शिक्षा पद्धति विशेषांक, अंक 5 नवम्बर–1999
2. शर्मा, राजकुमारी, श्रीवास्तव एस.बी.एन., दुबे, एस.के. (2007)–भारतीय शिक्षा और उसकी समस्यायें। राधा प्रकाशन मंदिर, आगरा।
3. मंगल, एस.के. एवं मंगल श्रीमती शुभ्रा (2005) – विद्यार्थी विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, लायल बुक डिपो.
4. पाठक, पी.डी. एवं मंगल, एस.के. (2013) – अधिगमकर्ता का विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, अग्रवाल पब्लिकेशन्स.
5. गुप्ता, एस.पी. (1997) : सांख्यिकी विधियाँ, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद.
6. भालेराव, चन्द्रकान्ता एवं श्रीवास्तव, आशा (2015) – माध्यमिक स्तर पर मध्यप्रदेश में आदिवासी शिक्षा का विकास, रिसर्च लिंक, 135 14(4):117-118.
7. त्रिपाठी रेणु एवं त्रिपाठी, अर्पणा (2007), भारत में प्राथमिक शिक्षा, प्रथम संस्करण, ओमेगा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली
8. प्रसाद, गोमती (2009), रीवा संभाग की अनुसूचित जाति एवं जनजाति के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति का समीक्षात्मक अध्ययन, पी–एच.डी. शिक्षा, अ.प्र.सिंह वि.वि., रीवा.